Ref-No. GGVS-2021/21/147

पशु स्वास्थ्य प्रबन्धन

श्रीरामशान्ताय

जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र
गोयल ग्रामीण विकास संस्थान

| गो आधारित जैविक कृषि को समर्पित |

राजस्थान जैविक प्रमाणीकरण संस्थान जयपुर द्वारा प्रमाणित

ग्राम जाखोड़ा, कैथून-सांगोद मार्ग, कोटा - 325001 (राजस्थान)

88759 95439 ggvs@goyalglobal.com www.ggvsglobal.com

पशु स्वास्थ्य प्रबन्धन

दूध उत्पादन की क्षमता को लम्बे समय तक सुचारु रखने के लिए पशुओं को स्वस्थ बनाये रखना आवश्यक है।

समुचित स्वास्थ्य रक्षा के लिए निम्नलिखित बातें जरुरी है

- पशुओं को सन्तुलित पशु आहार ही देवें, भोजन की कमी एवं लगातार असन्तुलित एवं कम आहार खिलाने से पशु शरीर कमजोर हो जाता है। जिसके कारण मादा पशु का ताव में न आना, बार–बार गर्मी में आना, गर्भपात हो जाता तथा प्रसव के बाद जेर का रूकना, गर्भाशय का बाहर निकलना, एकाएक दूध का कम हो जाना एवं दुग्ध ज्वर आदि रोग हो जाते हैं।
- अच्छी खिलाई–पिलाई के बावजूद भी पशुओं के पाचन तंत्र में अंत कृमि जैसे – लीवरफल्यूक, पटार, फीताकृमि एवं गोलकृमि आदि व बाह्यकृमि जैसे – चीचड़े, जूऐं एवं पिस्सु आदि के प्रकोप के कारण बछड़े/पाड़िया एवं वयस्क पशुओं की बढ़वार रूक जाती हैं।

- अंतकृमियों की रोकथाम हेतु – बछड़ों को प्रथम एवं तृतीय सप्ताह की उम्र में 15–15 एम.एल. एवं 2 व 4 माह की उम्र में 30–30 एम.एल. पिपराजिन एडिपेड दवा देना। होम्योपेथिक दवा–सीना 200 भी दे सकते है।
- वयस्क पशुओं को वर्ष में 3 बार फरवरी, जून व अक्टूबर में एलर्बेन्डाल जोल, नीलबर्म आदि दवा स्थानीय पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार बड़े पशु को 100 एम.एल. एवं छोटे को 50 एम.एल. देवें। प्रारम्भ में यही दवा 15 दिन बाद दुबारा देनी चाहिए।
- बाह्य परजीवी जैसे चीचड़े एवं जूएँ आदि के प्रकोप से बचाव हेतु ब्यूटोक्स या अन्य उपलब्ध दवा को एक लीटर पानी में 5 एम.एल. दवा घोल कर पशु शरीर पर पोंचा लगाना चाहिए। प्याज का रस लगाने से भी जूएँ व चीचड़े मर जाते है। प्याज के रस की मालिश भी कर सकते हैं।

- सात माह के ग्याभिन पशु को पेट के कीड़े मारने की दवा नहीं देनी चाहिए।
- बीमारी की रोकथाम ईलाज बेहतर है। अतः वर्षा से पूर्व अप्रेल–मई में प्रति वर्ष गलघोटू, लंगड़ा बुखार एवं वर्ष में दो बार अप्रेल–मई व सितम्बर–अक्टूबर में खुरपका, मुँहपका रोग के टीके लगवाने चाहिए।
- थन की सूजन, दूध का रंग बदलना, चीथड़े या खून आना आदि लक्षण थनैला रोग के है। इसका इलाज यथा शीघ्र करवायें अन्यथा थन खराब होने की सम्भावना रहती हैं। पशु की गादी व थनों को रोग रहित रखने के लिए लाल दवा के घोल से थनों को धोते रहना चाहिए।
- पशु में रोग के लक्षण दिखाई देते ही तुरन्त पशु चिकित्सक को दिखावें।
- पशुओं के प्राथमिक उपचार हेतु लाल दवा, टींचर आयोडीन, तारपीन का तेल, अरण्ड़ी का तेल, मैग्निशियम सल्फेट, बोरिक अम्ल, एन्टीसेप्टिक क्रीम एवं टोपीक्योर स्प्रे आदि दवायें घर पर रखें।